श्याम प्रसाद 'श्रेष्ठ'

ई—मेल-shyampdstha64@gmail.com

दरिद्रता

"सभापति महोदय! हम जानवरों को भी इंसानों कि तरह धन-दौलत संचय करने का अधिकार होना चाहिए।" गिद्ध ने पशु सम्मेलन में अपना प्रस्ताव पेश करते हुए कहा।

पशुओं के बीच विवाद बढ़ गया। अन्त में, सभा के अध्यक्ष हाथी ने गिद्ध की तरफ सिर घुमाकर कहा— "मान्यवर जी! हम पशुओं के पूर्वज बहुत विद्धान और परिश्रमी थे। हमारी पूर्वजों ने हमें पैतृक धन-सम्पत्ति का लोभ और संचय करने की संस्कृति नहीं सिखाई। इसीलिए आज हम जानवर खुश और सुखी हैं।

गिध्द ने अपनी जगह खड़े रहकर जिज्ञासा रखी— "सभापति महोदय! क्या संसार में जानवरों से भी ज्यादा खुश और सुखी मनुष्य नहीं हैं?"

सभा के अध्यक्ष हाथी ने गिध्द की तरफ देखते हुए कहा, "मनुष्य सोचते हैं कि वे जगत में सबसे अधिक विद्धान हैं, लेकिन बिल्कुल भी वैसे नहीं हैं । धन-संचय करने के स्वार्थ में वे ईश्वर द्धारा दी गई बुद्धि और विवेक को स्वार्थ मे बंधक रखकर बहुत सम्पत्ति का अर्जन कर तो लिया; लेकिन आज भी धरती पर मनुष्य खुश और सुखी नहीं है। हम पशु इस धरती पर मनुष्य जैसे दरिद्र और कलंकित होना नहीं चाहते।"

हिन्दी अनुवाद : किशन पौडेल

बागमती प्रदेश, हेटौंडा, नेपाल के रहने वाले श्यामप्रसाद 'श्रेष्ठ' एक स्थापित लघुकथाकार हैं। उनका १लघुकथा संग्रह और २ नाटक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। १ अन्य कथा संग्रह प्रकाशन के लिए प्रेस मे है।